# शिक्षा का भारतीयकरण हो

*- इंदुमति काटधरे*

आज हमारे देश में शिक्षा के क्षेत्र में चल रहे कार्य यूरोपीय शिक्षा की ही जड़ें मजबूत कर रहे हैं ना कि भारत की प्राचीन वैभवशाली शैक्षिक व्यवस्था की, जिसके कारण भारत को 'विश्व गुरु' की संज्ञा प्राप्त थी। यह चिंता प्रकट की **सुविख्यात शिक्षाविद्** एवं **'पुनरुत्थान विद्यापीठ'** की निदेशिका सुश्री इंदुमती काटधरे जी ने। सुश्री काटधरे अहमदाबाद स्थित अपने संस्थान के माध्यम से प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था को पुर्नस्थापित करने के नये-नये प्रयोगों में लगी हुई हैं। उन्होंने 8 सितंबर को अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा दिवस के मौके पर नई दिल्ली स्थित दीनदयाल शोध संस्थान में आयोजित स्वाध्याय मंडल के सम्मुख इस बात पर चिंता जताई कि भारत में आज शासन तंत्र के अधीन शिक्षा व्यवस्था चल रही है जबकि दुनिया में ऐसा कहीं नहीं है। भारत में 19वीं शती तक राजा और शासन को गुरुओं के सम्मुख झुकना पड़ता था। लेकिन आज शिक्षा राज्य से नियमित और नियंत्रित हो रही है। उन्होंने दु:ख प्रकट किया कि जहां पहले शिक्षा नि:शुल्क थी वहीं आज बाज़ारीकरण से ग्रस्त है। उन्होंने कहा कि इस व्यवस्था में आमूल-चूल परिवर्तन लाए बिना भारतीय प्रतिमानों की पुनर्प्रतिष्ठा नहीं हो सकती।

भारत में 1947 से पहले सभी देशी राज्यों में कहीं भी शिक्षा के लिए शुल्क नहीं लिया जाता था। उच्चतम श्रेणी तक शिक्षा नि:शुल्क थी। समाज द्वारा ही शिक्षा की व्यवस्था होती थी। इस संदर्भ में श्रीमती काटधरे ने प्रश्न उठाया कि इस विषय में शोध क्यों नहीं होता कि आखिर यह व्यवस्था कैसे और क्यों बदली? यदि श्री राजनारायण बसु, श्री अरविन्द और गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोर ने शिक्षा के भारतीयकरण के प्रयास किए तो वे असफल क्यों रहे? उन्होंने चेताया कि भारतीय ज्ञानधारा में यूरोपीय ज्ञानधारा को प्रतिष्ठित करने से केवल संघर्ष की स्थिति पैदा होगी। इतिहास में झांकते हुए उन्होंने इस मिश्रण की जड़ें अंग्रेजों के उस घोषित उद्देश्य में बताई जिसके तहत भारत में उन्हें 'काले अंग्रेज़' पैदा करने थे। खुले आम धर्मान्तरण कठिन था इसलिए अंग्रेज़ों ने पाश्चात्य विचारधारा थोपकर 'निधर्मी' बनाने का एक षड्यंत्र रचा। आज के संदर्भ में यूरोपीय फ्रेमवर्क में भारतीय बातों को फिट करने की कोशिश को गलत बताते हुए उन्होंने ज़ोर दिया कि शिक्षा व्यक्ति के अर्थार्जन की दृष्टि से नहीं बल्कि समाज निर्माण की दृष्टि से की जानी चाहिए। शिक्षा में शैशवकाल पूर्व से ही संस्कारों पर बल दिया जाना चाहिए जिसकी प्रक्रिया माता-पिता की शिक्षा से ही शुरु होती है।

पं० दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानवदर्शन में भारतीय शिक्षा का आधार - शरीर, मन बुद्धि और आत्मा का विकास सूत्र लेकर नये पाठ्यक्रमों की आवश्यकता पर उन्होंने ज़ोर दिया। अपने विद्यापीठ में सुश्री काटधरे किस प्रकार से एकात्म मानवदर्शन के आधार पर पाठ्यक्रम चला रही हैं, इसकी विस्तृत जानकारी उन्होंने स्वाध्याय मंडल को दी। उन्होंने बताया कि **'पुनरुत्थान विद्यापीठ'** में चार क्षमताओं को विकसित करने पर बल दिया जाता है। सबसे पहले अभिभावक शिक्षा पर ध्यान दिया जाता है। इसके तहत माता प्रथम गुरु और पिता द्वितीय गुरु कैसे बने, अच्छा मनुष्य बनने के लिए मूल्य शिक्षा या धर्म शिक्षा कैसे दी जाए, इन प्रश्नों का उत्तर खोजा जाता है।

दूसरे स्तर पर शिक्षकों की शिक्षा की व्यवस्था की जाती है। शिक्षकों को सबसे कमज़ोर कड़ी बताते हुए उन्होंने कहा कि जरुरत इस बात की है कि शिक्षक खुद को कर्मचारी न समझकर गुरु मानें। समाज को सही अर्थों से सुशिक्षित करने के लिए अध्यापक की गरिमा को पुन: स्थापित करने की आवश्यकता पर उन्होंने बल दिया। तीसरे स्तर पर परिवार की शिक्षा को मज़बूत बनाने के प्रयास की जानकारी देते हुए उन्होंने कहा कि शिक्षा को संस्थागत बनाने से रोकने के लिए परिवार संस्था की मज़बूती आवश्यक है क्योंकि जीवन की शिक्षा परिवार में ज़्यादा मिलती है। उन्होंने जानकारी दी कि चौथे स्तर पर जो पाठ्यक्रम विद्यापीठ में चल रहे हैं वे हैं - लोक शिक्षा के प्रयोग। इस विषय में इंदुमति काटधरे का मानना है कि बिना लोक शिक्षण के समाज के सभी घटकों की प्रगति में आम नागरिकों का सक्रीय सहयोग संभव नहीं है। इसलिए उन्होंने विश्वास जताया कि समाज का योगदान रहा तो एक दिन, चाहे इसमें कई पीढ़ियां लग जाएं हम सरकारी नियंत्रण से परे, बाज़ारीकरण से मुक्त और नि:शुल्क शिक्षा का उद्देश्य भी प्राप्त कर लेंगे।

स्वाध्याय मंडल में दीनदयाल शोध संस्थान के कार्यकर्ताओं, शिक्षाविद्ों और समाज के विभिन्न वर्गों से आए प्रबुद्धजनों ने भाग लिया।